वर्ष -15 फरवरी, 2019 अंक-153

Regd. Postal No. Dehradun-328/2016-18
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

मुस्कुराहट बड़ी दौलत	02	एक सेविका के भाव	10
देववाणी	03	How to discover the.....	11
नव वर्ष के लिए मंगल कामनाएँ	04	महाशिविर रिपोर्ट	14
ख़ुशहाली का राज़	06	शोक समाचार	31
जो है, उसकी ख़ुशियाँ कहाँ हैं!	08	सम्बन्धों का उत्सव 2019	32

जीवन व्रत

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।'
- देवात्मा

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : प्रमोद कुमार कुलश्रेष्ठ

For Motivational Talks/Lectures/Sabhas :
Visit our channel Shubhho Roorkee on
www.youTube.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ₹ 100, सात वर्षीय ₹ 500, पन्द्रह वर्षीय ₹ 1000
मूल्य (प्रति अंक): ₹ 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

मुस्कुराहट बड़ी दौलत

आपका सब कुछ चला जाए तो भी परवाह नहीं करना, लेकिन चेहरे से मुस्कुराहट नहीं जानी चाहिए। जब मुस्कुराहट रहती है तो सब लोग हमारे इर्दगिर्द रहते हैं। जैसे ही मुस्कुराहट चली जाती है, लोग भी हमें छोड़कर चले जाते हैं। घर-परिवार और ज़मीन-ज़ायदाद को हम वास्तविक सच्चाई समझते हैं। लेकिन इस सच्चाई को भूल जाते हैं कि हम सबको ये शरीर और धन दौलत सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है। इस सच्चाई को याद रखने वाले श्रेष्ठ बन जाते है। दुनिया में कोई अपने जीवन को तीर्थ बनाकर जीता है, तो कोई तमाशा बनाकर।

- तरुण सागर

कोमल भाव

मनुष्य कितना ही कठोर हो, उसके दिल के किसी कोने में रस छिपा रहता है, जिस तरह पानी और पत्थर में आग छिपी रहती है। क्रूर मनुष्य में भी कोमल भाव छिपे रहते हैं।

MISTAKE

Mistake is a single page in a part of life.
But relation is a book of dictionary.
Just do not lose a full book for a single page!

अध्यापक व ज़िन्दगी

अध्यापक और जिन्दगी में बस इतना ही फ़र्क़ है- अध्यापक सबक सिखाकर इम्तिहान लेता है, जिन्दगी इम्तिहान लेकर सबक सिखाती है।

मैदान में हारा हुआ इन्सान फिर से जीत सकता है, लेकिन मन से हारा हुआ इन्सान कभी नहीं जीत सकता।

देववाणी

मेरे साथ जुड़ने के बाद कोई आत्मा जहाँ तक मेरे उच्च प्रभावों को ग्रहण करता है, वहाँ तक उसके भीतर वह नई ज्योति प्रकट होती है कि जिससे वह आत्मिक जीवन की असलियत और उसके नियमों को ज़्यादा से ज़्यादा देखने और पहचानने के योग्य बनता जाता है।

- देवात्मा

कितना कम जानते हैं हम कि हम क्या हैं!
और उससे भी कितना कम जानते हैं हम कि हम क्या हो सकते हैं!

- बायरन

ADVICE

An outstanding and fantastic message for life time-
You will definitely suceed in your life if you follow all the advices that you give to others.

मुसीबत में अगर मदद माँगो तो सोचकर माँगना, क्योंकि मुसीबत थोड़ी देर की होती है और एहसान ज़िन्दगी भर का.....

गुदगुदी

पुराने ज़माने में जब कोई अकेला बैठकर हँसता था, तो लोग कहते थे, कि इस पर कोई भूत-प्रेत का साया है।
आज कोई अकेले में बैठकर हँसता है, तो कहते हैं... मुझे भी **SEND** कर दे।

अगर आप सही हो, तो कुछ भी साबित करने की कोशिश मत करो।
बस सही बने रहो, गवाही वक़्त ख़ुद दे देगा।

नव वर्ष के लिए मंगल कामनाएँ

प्रिय मित्रो! वर्ष 2019 आरम्भ हो चुका है। नव वर्ष की इस मंगलमय वेला पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। शुभ कामनाएँ आपके लिए तथा आपके बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए। आप हर प्रकार की हानि से सुरक्षित रह सकें, रोगमुक्त रह सकें। यदि कोई जन रोगग्रस्त हो, तो उसके प्रति उसका दृष्टिकोण भी उस रोग को घटाने अथवा बढ़ाने का महत्त्वपूर्ण कारण बनता है। अतः सदा आशावादी दृष्टिकोण रखना चाहिए। यथा- मेरा रोग ठीक हो जाएगा, मैं स्वस्थ्य हो जाऊँगा। ऐसी आशा तथा ऐसा विश्वास हमें रोगमुक्त होने में तथा स्वास्थ लाभ करने में हमारी बहुत सहायता करता है। अतः आप सभी के लिए ऐसी शुभकामनाएँ करता हूँ कि आपका जीवन के प्रति दृष्टिकोण सदा सकारात्मक हो सके।

मंगल कामनाएँ आपके तथा आपके बच्चों के मानसिक विकास के लिए। मंगल कामनाएँ आपके आर्थिक विकास के लिए, आपके सात्विक विकास के लिए तथा सबसे बढ़कर मंगल कामनाएँ आपके आत्मिक अर्थात् आध्यात्मिक विकास के लिए। आपके हृदय में उच्च भाव अंकुरित हो सकें, विकसित हो सकें। दूसरों के सद्गुणों को देखने का, सराहने का तथा उनका अनुकरण करने का भाव आप में उत्पन्न हो सके। दूसरों से पाई सेवाओं को महसूस करने, उनके लिए कृतज्ञ भाव से सेवाकारी बनने का भाव उत्पन्न तथा विकसित हो सके। आपके सब सम्बन्धों में शुभ परिवर्तन आवे। हम सब अपनी-अपनी कमियों तथा दोषों को देखने तथा दूर करने के लिए सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्योति एवं धर्म बल प्राप्त कर सकें। अपने जीवन की सफलता 'पर सेवा' में देखने का दृष्टिकोण हम सब में उत्पन्न तथा विकसित हो सके, इस वर्ष के लिए ऐसी मंगल कामनाएँ करता हूँ।

जितनी उच्च उपलब्धियाँ आप प्राप्त करते जायेंगे, यह वर्ष आपके लिए उतना ही मंगलमय प्रमाणित होगा। आपके बच्चे तथा अन्य बड़े सम्बन्धी आपसे मिल रही सेवाओं तथा सहायता को देखने की योग्यता प्राप्त कर सकें। आपके प्रति दीन भावी (अर्थात् नम्र भावधारी) तथा सेवाकारी बन सकें एवं आपके प्रति कृतज्ञता का भाव अंकुरित तथा विकसित कर सकें। प्रत्युत्तर में आप भी सच्ची दीनता (नम्रता) अपने भीतर विकसित कर सकें। आप 'आत्मिक धन' अर्थात् 'धर्म धन' लाभ करने के अधिक से अधिक योग्य बनते जावें, तथा प्रकृति (Nature) की सहायकारी शक्तियों की सहायता प्राप्त करने के आप अधिक से अधिक अधिकारी बनते जावें। आपके

जीवन में तीन मन्त्र- आनन्द में वचन मत दीजिये, क्रोध में उत्तर मत दीजिये, दुःख में निर्णय मत लीजिये।

लिए ऐसी मंगल कामनाएँ करता हूँ।

हम सभी मानव प्रजाति के सदस्य हैं। अतः हम सब में मानवता अधिक से अधिक विकसित हो सके। काश! यह वर्ष हम सभी के लिए शुभमय हो! यह वर्ष हमारे लिए तभी शुभमय हो सकता है, जब हम प्रकृति के जीवनदायक शाश्वत तथा अटल नियमों को दृढ़ संकल्प तथा नैतिक बल के साथ निरन्तर पूरा करते जायेंगे। यह वर्ष हम सभी में 'परस्पर उच्च मेल' के वर्द्धन करने वाला प्रमाणित हो। विश्व में जो-जो संस्थाएँ जितने-जितने अंश शुभ के लाने में सहायकारी हो सकती हैं तथा हो रही हैं, उनमें ऐसी योग्यता और अधिक से अधिक बढ़ सके। परोपकारी आत्माओं का अधिक से अधिक शुभ हो। उन सब में सेवा भाव और अधिक विकसित हो सके। इस विश्व में शुभ तथा शान्ति का दायरा (अर्थात् क्षेत्र) और बढ़ सके!

हम सबके शुभ का मार्ग प्रशस्त हो! नव वर्ष 2019 हम सबके लिए अधिक से अधिक मंगलमय हो, शुभमय हो! सबका शुभ हो!

- चन्द्रगुप्त (अम्बाला शहर)

भगवान् के भीतर हर प्रकार मैल के लिए ज़बर्दस्त घृणा है, इसीलिए भगवान् के मिशन में जहाँ बाहर की मैल दूर होती है, वहाँ हृदय की मैल भी धुलती है। हृदयों की मैल धुलने का आश्चर्यजनक कार्य भगवान् के देव प्रभावों से जारी हो गया है और आत्मा सच्चे अर्थों में शुद्ध और निर्मल हो रहे हैं।

किसी सम्बन्ध की क़ीमत इस बात से पता नहीं चलती कि आप उसके साथ होने पर कितना ख़ुश रहते हैं, बल्कि इस बात से पता चलती है कि उसके साथ के बिना कितना खाली महसूस करते हैं।

Value of relation is not how much one feels happy with someone, but the emptiness that one feels without someone.

कितना भी पकड़ लो फिसलता ज़रूर है
ये वक़्त है साहब! बदलता ज़रूर है।

ख़ुशहाली का राज़

जीवन में ख़ुशहाली तो हरेक चाहता है, लेकिन उसको पाने का राज हमारी ही सोच में छुपा है। निस्सन्देह सकारात्मक (चवेपजपअम) सोच के बिना ख़ुशहाली ख़ुशी नहीं दे सकती। धन्य हैं वे जन जो इस राज को जानते हैं, समझते हैं तथा तद्नुसार जीवन यापन करते हैं।

हम में से ऐसा कौन होगा कि तरक्की व ख़ुशहाली के लिए प्रयत्न नहीं करता। लेकिन मात्र अपने बारे में सोचते रहने वाला व्यक्ति बहुत ज़्यादा दूर तक जीवन के विकास की राह पर आगे नहीं बढ़ सकता। जीवन में बहुत दूर तक विकास का दामन वही थामे रख सकते हैं, जो अपनी भलाई के साथ-साथ दूसरे का भी भला सोचते हैं, विकास करते हैं।

जीवन में ख़ुशहाली प्राप्त करने के इस नियम को एक किसान बखूबी जानता था। वो किसान बहुत ही उम्दा किस्म का मक्का उगाता था। हर वर्ष उसकी उगाई हुई मक्का को राष्ट्रीय फसल मेला में पुरस्कृत किया जाता था। एक साल एक रिपोर्टर उसका साक्षात्कार लेने और यह जानने की उत्सुकता के साथ कि वह हर वर्ष ऐसा कैसे कर पाता है, वहाँ आया।

आसपास सबसे किसान के बारे में पूछने पर उसे पता चला कि किसान हर वर्ष अपने पड़ोंसियों को अपना अच्छी किस्म का मक्का का बीज नि:शुल्क बाँटता है। रिपोर्टर किसान के पास गया और उससे पूछा, ''आप अपने सभी पड़ोसियों को अच्छी किस्म का बीज नि:शुल्क क्यों बाँटते हैं। इससे तो आपका कितना ख़र्च हो जाता होगा।''

किसान बोला, ''क्या आप नहीं जानते? हवाएँ पके हुए मक्का के पराग कणों को उड़ा कर आसपास के खेतों में फैला देती हैं। अगर मेरे पड़ोसी बेकार किस्म का मम्का बोयेंगे, तो हर साल उनकी फसल से आये पराग कण मेरे खेतों में भी बिखरेंगे और क्रॉस पोलिनेशन के कारण साल दर साल मेरी फसल की गुणवत्ता गिरती चली जाएगी। इसलिए अगर मैं अच्छी मक्का उगाना चाहता हूँ तो मुझे मेरे पड़ोसियों को भी अच्छी मक्का उगने में मदद करनी होगी।''

वास्तव में हमारे जीवन की सच्चाई भी कुछ इसी प्रकार की है। अगर हम अच्छा और ख़ुशहाल जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें हमसे जुड़े सभी लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए।

दुनिया में इन्सान को हर चीज़ मिल जाती है,
सिर्फ़ अपनी ग़लती नहीं मिलती।

हमारे जीवन में ख़ुशी और शांति का स्थायी वास तभी हो सकता है, जब हमसे जुड़े हुए लोग भी ख़ुशहाल हों।

काश, हम सभी भी ख़ुशहाली के इस राज को समझकर अपने जीवनों में अपना सकें तथा अपने सम्बन्धियों, मित्रों व परिचितों के जीवनों में कुछ सकारात्मक योगदान देते हुए स्वयं के जीवन को ऊँचा उठा सकें व ख़ुशहाल जीवन जी सकें। हम सब ऐसे कर पायें, ऐसी है शुभकामना!

– प्रो. नवनीत अरोड़ा

याद आने दो

बेकार की यादों दफ़ा होवो, गुरु की याद आने दो;
धर्म पथ से न भटकाओ, गुरु की याद आने दो।

बहुत भटका बहुत डोला, मगर कुद हाथ न आया;
गुरु चरणों में आने का मिला अवसर, गुरु की याद आने दो।

क्या दिलकश वातावरण है, क्या अद्वितीय शिक्षा है;
दिखाया जिसने यह मंज़र, उन्हीं की याद आने दो।

मिला साहित्या क्या अद्‌भुत, मिले उपदेश क्या हितकर;
मिला जिससे मुझे यह सब, उन्हीं की याद आने दो।

मैं बहता जाता था बेसारता, नीच रागों की लहरों में;
बढ़ाया हाथ जिस गुरु ने, उन्हीं की याद आने दो।

पड़ा था दूर गुरु से, यह मेरी बदनसीबी थी;
मगर अब लौट आया हूँ, बस उनकी याद आने दो।

तू केवल देह ही नहीं है, तू रखता आत्मा भी है;
दिलाया याद जिस गुरु ने, उन्हीं की याद आने दो।

– वीरेन्द्र डोगरा, योल कैण्ट, जि. कांगड़ा (हि.प्र.)

हीरे को परखना है तो अँधेरे का इन्तज़ार करो। धूप में तो काँच के टुकड़े भी चमकने लगते हैं।

जो है, उसकी ख़ुशियाँ कहाँ हैं!

हमारे पास जो नहीं है, उसका रोना तो हम अक्सर रोते हैं, पर जो कुछ हमारे पास है, क्या उसके लिए कृतज्ञता जताते हैं। अगर हम कृतज्ञता का अनुभव करने लगेंगे, तो जीवन में ख़ुशियाँ बरसने लगेंगी।

आपने कभी अनुभव किया है कि हमारे पैदा होने से लेकर जीवन पर्यन्त तक बहुत सी चीज़ें हमारे साथ, हमारे लिए ऐसी होती हैं, जिनका कोई मोल नहीं है। लेकिन, हम उनके लिए कृतज्ञ नहीं होते हैं, बल्कि जो चीज़ें हमारे पास नहीं हैं, उसके लिए दु:खी होते हैं। जब आप कृतज्ञता का अनुभव करने लगेंगे, तो इसके द्वारा आप अपने जीवन को बदल सकते हैं और सुधार कर सकते हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, डेविस के मनोविज्ञान के प्रोफेसर और पॉजिटिव साइकोलॉजी जर्नल के मुख्य सम्पादक रॉबर्ट एमन्स का मानना है कि कृतज्ञता भलाई की पुष्टि है। हम पुष्टि करते हैं कि दुनिया में अच्छे सामान, उपहार और लाभ प्राप्त हुए हैं। एक मौलिक अध्ययन में, एमन्स और उनके साथी शोधकर्ता माइकल मैकुली ने कुछ लोगों को तीन समूहों में विभाजित किया। पहले समूह के प्रतिभागियों को अपने पिछले हफ्ते के बारे में सोचकर उन पाँच चीज़ों को लिखना था, जिनके लिए वे आभारी थे। दूसरे समूह के प्रतिभागियों को पाँच परेशानियों या परेशान करने वाली चीज़ों अथवा अनुभवों को लिखने के लिए कहा गया था। तीसरे समूह के प्रतिभागियों को पिछले हफ्ते में प्रभावित करने वाली उन पाँच घटनाओं को, चाहे वे सकारात्मक हों, नकारात्मक हों या तटस्थ हों, के बारे में सोचने और लिखने को कहा गया।

इस अभ्यास के 10 सप्ताह बाद निकाले गए परिणाम में पाया गया कि पहले समूह (कृतज्ञता जताने वाले) के प्रतिभागियों ने अपने जीवन के बारे में बेहतर महसूस किया। वे अपने आने वाले सप्ताह के बारे में अधिक उत्साहित थे और उनमें शारीरिक बीमारी के लक्षणों का कम अनुभव किया गया।

इस निष्कर्ष के बाद कृतज्ञता को अवसाद को कम करने, सहानुभूति बढ़ाने, आत्म-सम्मान में सुधार करने और मानसिक लचीलापन बनाने के लिए उपयोगी बताया गया है। कृतज्ञ होने का मतलब है कि हमारे पास जो है, उसके लिए दिल से शुक्रगुज़ार होना एवं अनुभव करना। कृतज्ञता एक जादुई शब्द है, यह हमारे जीवन में जादू की तरह काम करता है और बहुत से लोगों ने जीवन में इसका उपयोग कर अपने जीवन को समृद्धशाली, ख़ुशहाल, आनंदित एवं अनुकरणीय बनाया है।

जिन्दगी में आप कितनी बार हारे यह कोई मायने नहीं रखता,
क्योंकि आप जीतने के लिए पैदा हुए हैं।

ज़्यादातर लोग अपनी कमियों के बारे में बात करते हैं, दु:खों के बारे में बात करते हैं, असफलता के बारे में बात करते हैं, जिसके कारण वे दु:खों से घिरे रहते हैं। क्योंकि यह एक सर्वव्यापी नियम है कि हम जो बात करेंगे, जिसकी बात करेंगे एवं जो अनुभव करेंगे, वही होगा, वही बढ़ेगा। यानी हम जिसकी बात करेंगे और जैसा अनुभव करेंगे, हमारे साथ वैसा ही होगा।

हम यह भूल जाते हैं कि दु:ख की घड़ियों के बीच, असफलता एवं कमी के वातावरण में भी हमारे साथ कुछ ऐसा होता है, कुछ ऐसा रहता है, जिसके लिए हम शुक्रगुज़ार हो सकते हैं, आभार व्यक्त कर सकते हैं एवं कृतज्ञ अनुभव कर सकते हैं। लेकिन, हम ऐसा नहीं करते हैं, जिसके कारण हमारे पास जो होता है, वह भी हमसे दूर हो जाता है।

जो हमारे पास है, उसके लिए कृतज्ञ होना, हमारे लिए और बहुत सी चीज़ें जो हमारे पास नहीं है, उनको पाने का मार्ग खोलता है। कृतज्ञता की भावना विकसित करना एक ऐसा कौशल है, जो वास्तव में आपके जीवन के हर पहलू को बेहतर बना सकता है। आपको कुछ भी अच्छा होने की प्रतीक्षा नहीं करनी है, अगर आप सबसे खराब संभव जीवन नहीं जी रहे हैं, तो ऐसा कुछ ढूँढना आसान हो सकता है, जिसके लिए आप आभारी हैं। चाहे आप उन सभी बुरी चीज़ों के बारे में सोचकर ऐसा करते हैं, जो आपके साथ नहीं हुए हैं या साधारण चीज़ों की सुन्दरता को पहचानकर, आप अपने जीवन के हर पल में कल्याण महसूस कर सकते हैं।

हमारे पास जो कुछ भी है, उसके प्रति लगातार कृतज्ञता जताते हैं, तो यह एक सकारात्मक सामाजिक क्रिया है। इस दौरान मस्तिष्क और शरीर में न्यूरो केमिकल बदलाव होता है। मस्तिष्क में ऑक्टसीटोसिन और सेरोटोनिन जैसे हार्मोन्स का स्त्राव बढ़ जाता है, जिससे हम बेहतर, संतुष्ट और ख़ुशी महसूस करते हैं। इसके फलस्वरूप हमारा शुगर और बीपी संतुलित रहता है। तनाव पैदा करने वाले रसायन का स्त्राव कम हो जाता है। इससे दिनोदिन हमारी ज़िन्दगी बेहतर होती जाती है। नींद अच्छी आती है और हमारी उम्र में वृद्धि होती है।

साभार- अमर उजाला (25.12.18)

ज़िन्दगी में कठिनाइयाँ आयें तो उदास ना होना क्योंकि कठिन रोल अच्छे एक्टर को ही दिए जाते हैं।

एक सेविका के भाव

भगवान देवात्मा जी के पावन, पवित्र महान् रूप को मुझ तुच्छ का कोटि-कोटि प्रणाम!

हे! सत्गुरु, हे! दया के सागर, केवल आप ही पूरे संसार में एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु हैं। आपका सत्य और शुभ अनुरागी जीवन मानव जाति के लिये एक सुन्दरतम उपहार है। आपकी शरण में आने से मानव एक सुन्दर अद्भुत जीवन जीने के लिए मज़बूर हो जाता है। उसे एक विशेष ख़ुशी का आभास होता है और वह सर्वथा उच्च भावों के आनन्द में रहता है।

हे! देवगुरु भगवान आपकी शरण को जो जन प्राप्त करता है वह समुचित सुखों को प्राप्त करता है। अन्यथा मनुष्य सुख की तलाश में मारा-मारा फिरता है। वह भौतिक वस्तुओं में सुख को ढूँढता है। बाबा लोगों के पास जाकर कुछ पैसा चढ़ाकर भौतिक सुखों को माँगता है, जिससे उसको सुख तो प्राप्त नहीं होता, मगर उसका जीवन दु:खों से भर जाता है।

हे! भगवन, हे! तारण हारे, आपकी शरण में आने से मेरा कल्याण हुआ है। मेरी रुचियाँ बदल गई हैं जो पहले नीच रुचियाँ थी अब उनमें सुधार हुआ है। आपके पास तो हमारे लिए बहुत कुछ हैं, मगर हमारी योग्यता कम है। हे सत्गुरु मुझ नीच जीवनधारी को आपने शरण में लेकर बहुत उपकार किया हैं। मेरे पास आपको देने के लिये धन्यवाद के अलावा कुछ नहीं है और आपकी महिमा व आपके दिये हुए दान के समक्ष धन्यवाद तो कोई काम नहीं करता है।

हे! भगवन, मैं आपके समक्ष अपने हृदय के गहरे भावों से प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरी नीचता दूर करके मेरे जीवन को सेवाकारी बना दो, जिससे मेरा उद्धार हो सके। आपका आध्यात्मिक तेज पूरे विश्व में सूर्य की भाँति चमकता रहे। आपकी ज्योति शक्ति घर-घर तक, जन-जन तक पहुँचे। जिससे देवराज फैले और सर्वप्रकार से समस्त दुनिया का भला हो सके। सम्बन्धों में हितकर मेल आवें।

हे! सत्गुरु आपका रूप एक महान् सेवाकारी उपकारी रूप है, जिसके दर्शन मात्र से कायाकल्प हो जाती है। आपके ऐसे रूप के दर्शन कर पाऊँ। हरदम आपके गुण गाऊँ। आपकी महिमा को जानूँ। आपकी शिक्षा को पाऊँ। यह मेरी हार्दिक इच्छा है कि आपका शुभ हो! मेरा शुभ हो! सबका शुभ हो! सभी धर्मसाथियों का शुभ हो!

- सुदेश खुराना (लुधियाना)

यदि अन्धकार से लड़ने का संकल्प कोई कर लेता है। तो एक अकेला जुगनू भी सब अन्धकार हर लेता है।

How to discover the 'Joy of Giving'

Many of us acknowledge the power of giving but not all of us do. Our charitable actions remain just ideas because some where the belief, trust and motivation of doing Good weakens when question or time of parting with money comes.

Philosophers and Psychologists have argued that human beings by default are not pure Altruists. Our hearts and brains are wired to pursue activities that offer us various kinds of pleasures and satisfaction of the same over a period of time enslaves us to them. A modified form of Altruism however exists, called warm glow theory i.e. when we give, we feel a sense of control and power that that we are able to make a difference in the life of person receiving our charity. The psychological satisfaction of having done a good deed makes us feel good. We might therefore, be giving because of the pleasure that the act of giving provides us rather than the benefit it provides to the receiver.

There are other social factors that may promote charity. When donors sense acknowledgement and see that charity contributes to their social status, enhancing their standing in their peer group and or to some extent in their upper or lower strata people, they tend to give something in charity. Not everyone is enamored by such recognitions. There are psychological limitations too. Many societies look down upon acts of others asking for money. It is seen as acts of desperation, lacking self respect and honor. That is why many shoo away those begging at cross road, lighting signals, traffic jams by tapping windows of cars, suggesting to them that they should find some work instead, which may be justifiable, if the person

अपनी छवि का ध्यान रखें, क्योंकि इसकी आयु आपकी आयु से कहीं ज़्यादा होती है।

asking for donation or begging is capable enough to earn livelihood.

Studies have revealed and charitable organizations have identified, three primary drivers that encourage donations.

First, people tend to donate when beneficiary is identifiable or a cause to which they feel they make impact. While everyone empathizes with the tragedy of hunger, mal-nutrition and deprivation but donations come easily when actual beneficiaries are show cased.

Second, people donate when cause for which they are giving is closer to their hearts and is associated with strong emotional events related with them or their own or dear ones.

Third seeing that a cause is already funded or close to a finish line motivates others to donate. Besides donations from group opinion leaders, may become a trigger point for them to donate. Also to remain recognized with their peer group, people may come forward to donate.

In this melee of good or bad causes, good or not so good motivations, anonymous or ostentatious donations, the real and worthy causes, lose out in competition and remain unfunded and many of us remain unwilling to act altruistically in the real sense, losing sight of the real purpose of 'Giving'.

In the circumstances, if we are interested in real charity and wish to scale it up with passage of time and make charity a habit, it would be more desirous for us to:-

First, begin small with people around us. Pay for school fee of the children of household staff or who are in close proximity to us. Small groups could be formed in our locality to take care of

A great attitude becomes a great day which becomes a great month which becomes a great year which becomes a great life.

medical expenses or exigencies of the less fortunate around us who are not able to save for the rainy day due to hardly able to meet the expenses of bare necessities. These initiatives/ventures may not give us the Income tax benefits but will definitely prompt or act as motivators to our neighbors to chip in for social causes. To keep up the dignity of receivers, process of giving however should be simple and honorable.

Secondly, identify an organization, working for a cause closer to your heart. Begin with a small involvement to know what and how they do and their sincerity of purpose & transparency of operations etc. will be known to us. We may thereafter contribute as per their actual needs i.e. monetary needs, help through professional experience or expertise etc.

Thirdly, let us recognize that Happiness, Tranquility, real satisfaction, and success in life are all our own state of mind and generally have no correlation with level of our material wealth. Rather, our wealth & possessions, degrees, designations, titles etc themselves become liming factors for us in attaining our real purpose of life.

Hence let us start by earmarking a portion of our earning, how so ever meager may be, for contributing to Charity on regular basis. For Dev Samajis' in specific, since birthday of our Param Pujniye, most worshipful Guru Bhagwan Devatma, who sacrificed his whole life, bearing untold miseries Himself for up-liftment of humanity and bringing unity in all kingdoms of this universe, falls in this month, there can't be more auspicious month for us, to make such resolve.

Sent by- Yash Pal Singhal (Faridabad)

Everyone thinks of changing the world, but no one thinks of changing himself...

आत्मबल विकास महाशिविर- 2018

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 168 वाँ शुभ जन्म महोत्सव उन्हीं के सूक्ष्म संरक्षण में 18-21 दिसम्बर, 2018 तक आत्मबल विकास महाशिविर के रूप में देवधाम रुड़की में बड़ी धूम धाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शिविर का सारा वातावरण देवप्रभावों से सराबोर रहा, जिसकी एक संक्षिप्त झाँकी इस प्रकार है-

तैयारियाँ : महशिविर की सफलता हेतु शुभकामना एवं सुझावों का सिलसिला तो पूरे वर्ष ही चलता रहता है परन्तु अक्तूबर से दिसम्बर के पहले पखवाड़े में प्रचार दौरों, टेलीफोन व व्यक्तिगत सम्पर्कों के द्वारा महाशिविर में पधारने हेतु आम जनों, श्रद्धालुओं, शिष्य-शिष्याओं व समाज के विशिष्ट जनों से अनुरोध करने का सिलसिला शुरु कर दिया गया। विशेष तैयारियों हेतु मोगा से श्रीमती शशी गोयल व अम्बाला से सुश्री अशोक सिंगला जी कई दिन पहले ही रुड़की पधार गई थीं। इस प्रकार धर्म सम्बन्धी आते गए और सेवाओं का सिलसिला आगे बढ़ता रहा।

नवम्बर व दिसम्बर के पत्रिका के अंकों में शिविर का पूरा कार्यक्रम छपवाया गया। बहुत सुन्दर निमन्त्रण कार्ड छपवाकर बाहर के स्थानों को डाक से भेजे गए तथा स्थानीय व निकट के स्थानों पर हाथ से बाँटे गए। पूरे देवाश्रम की झाड़ पोंछ व सफ़ाई की गई, धर्मशालाओं की बुकिंग की गई, मिशन की गतिविधियों के डिस्पले बोर्ड तैयार किए गए व बैनर इत्यादि तैयार किए गए। इस वर्ष का मुख्य आकर्षण सुश्री अनिता सैनी जी द्वारा वर्ष भर के सोच विचार व अथक परिश्रम द्वारा डिजाइन किए गए परलोकवासी धर्मसम्बन्धियों के सिंहासन व पूजनीय भगवन का सिंहासन रहा।

शिविर स्थल: महाशिविर का मुख्य आयोजन श्री हरमिलाप भवन, सॉकेत रुड़की में रखा गया। ठहरने की व्यवस्था श्री हरमिलाप भवन, अग्रवाल धर्मशाला व देवाश्रम में रखी गई। भोजन की पूरी व्यवस्था श्री हरमिलाप भवन में ही रही।

आगमन: इस अवसर पर पधारे शिविरार्थियों के स्थानों की सूची व संख्या इस प्रकार है- **पंजाब:** संगरुर (5), चौंदा (5), बंगा (1), लुधियाना (5), कपूरथला (5), मोहाली (1), राजपुरा (1), पट्टी (1), मोगा (2); **हरियाणा:** जगाधरी (5), शादीपुर (1), अम्बाला शहर (12), शहजादपुर (1), नारायणगढ़ (4), पंचकूला (5), फरीदाबाद (6), गुड़गाँव (8), हिसार (1), पेहोवा (1), कैथल (1), बल्लभगढ़ (8), करनाल (1), सिरसा (3), पानीपत (2); **उत्तर प्रदेश:** सहारनपुर (22), बेहट (4), कुआँखेड़ा (1), भायलाखुर्द (10), रणखण्डी (1), छुटमलपुर (3), शामली (2), नावला (1),

संस्कारों से बड़ी कोई वसीयत नहीं होती और ईमानदारी से बड़ी कोई विरासत नहीं होती।

फोटो महाशिविर 2016

फोटो महाशिविर 2016

फोटो महाशिविर 2016

फोटो महाशिविर 2016

गंगोह (3), नोयडा (4), साहिबाबाद (4), मुजफ़्फ़रनगर (11), शाहपुर (1), पमनावली (1), तिसंग क्षेत्र (10), गाँव (60), वेहलना (4), मेरठ (7), लखनऊ (2), कानपुर (2), ग़ाज़ियाबद (5); **दिल्ली:** (4); **चण्डीगढ़:** (3); **हिमाचल प्रदेश:** लांझनी (6), योलकैंट (1), बलेरा (1), बैदी (2); **महाराष्ट्र:** मुम्बई (4); **गुजरात:** सूरत (1); **मध्यप्रदेश:** भोपाल (6); **असम:** गुवाहाटी (2); **उत्तराखण्ड:** मंगलौर (8), ज्वालापुर (02), विकासनगर (6), हरिद्वार (5), देहरादून (6), काशीपुर (1), खजूरी (1); **राजस्थान:** पद्मपुर (29), न्यूजर्सी (2), सिंगापुर (4)

इस प्रकार देश के 10 राज्यों के 62 स्थानों से 325 के लगभग लोगों ने इस महायज्ञ में भाग लिया। प्राय: 125 जन रुड़की नगर से साधनों में हिस्सा लेते रहे। कुल लगभग 450 जनों ने शिविर से लाभ उठाया। कड़ाके की ठण्ड के बावजूद इतनी दूर-दूर से धर्मसाथी पधारे, जो उत्साहजनक दृश्य था।

शिविर की गतिविधियाँ एवं सेवाकार्य

- मुख्य साधनों के भिन्न प्रात:कालीन निज का साधन, योगासान व प्राणायाम के सत्र भी नियमित रूप से चलते रहे।
- योगासान व प्राणायाम के सत्र में डॉ. काशीराम जी विशेष रूप से सहायक रहे।
- विश्वास चिकित्सा सत्र में श्रीमान कंवरपाल सिंह जी, श्रीमती नैना जी व श्रीमान् मनोहर जी व अन्य धर्मसाथी सहायक होते रहे।
- भजनों के गान में श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी, श्री विनोद गर्ग जी एवं अन्य धर्मसम्बन्धी सहायक होते रहे।
- किरयाना, सब्जी, दूध व खाने का सारा सामान श्रीमान् आर. एन. बत्रा जी, श्री अशोक वाधवा जी ख़ुशी-ख़ुशी लाते रहे।
- टैण्ट, बिस्तर, बिजली व अन्य मिश्रित कार्य श्री अंकुर जैन जी ने आनन्द टैंट हाऊस के सहयोग से बड़ी ही तनमैयता से अन्जाम दिए।
- खाने की व्यवस्था श्रीमती पूनम जैन जी ने श्री रामराज जी की टीम के सहयोग से बड़ी मुस्तैदी से सम्भाली। स्टोर की व्यवस्था ज्ञानी हरीशचन्द्र जी अरोड़ा ने बखूबी संभाली। भोजन वितरण का कार्य धर्मसम्बन्धी मिल जुलकर करते रहे।
- पानी व्यवस्था श्री बी.के. गुप्ता जी ने हर समय खड़े रहकर बड़ी ही खूबसूरती से

बुराई को देखना और सुनना ही बुराई की शुरूआत है।

निभाई। शिविर व शिविरार्थियों के लिए बिना मसाले का स्वादिष्ट गुड़ भी आपने हर वर्ष की भाँति उपलब्ध कराया।

- ❖ विशुद्ध सेवा कार्यों में एक टीम श्री सतीश जैन एवं श्री मुकेश गुप्ता जी के निर्देशन में स्थानीय गौशाला व कुष्ठ आश्रम गई। गौशाला में गायों को चारा खिलाया गया व पशु जगत् के लिए शुभकामना की गई। कुष्ठ आश्रम में कुष्ठ रोगियों को फल वितरित किए गए व उनके स्वास्थ्य के लिए शुभकामना की गई।
- ❖ बुक स्टॉल की व्यवस्था श्री हरीश अरोड़ा जी एवं श्री श्रेष्ठ अरोड़ा ने संभाली।
- ❖ कार्यालय का कार्य श्री संजय धीमान जी, श्री जे.पी. गोयल जी, श्री सतीश मेहता जी व श्री गौरव जी ने कुशलतापूर्वक निभाया।
- ❖ सफ़ाई व्यवस्था श्रीमती रेणु वाधवा जी व श्री अशोक खुराना जी ने दो सफ़ाई कर्मचारियों के सहयोग से पूरी जिम्मेवारी से निभाई।
- ❖ देवाश्रम की पूरी व्यवस्था श्रीमती शशि गोयल एवं श्री आदेश सैनी ने संभाली। अग्रवाल धर्मशाला की व्यवस्था श्री झण्डा सिंह जी पुण्डीर ने संभाली।
- ❖ बैनर लगाने, सजावट करने व दीपमाला बनाने में श्रीमान् जवाहरलाल जी के निर्देशन में श्री डी. के. कपिल, श्रीमती शिल्पी जैन, आई. आई. टी., रुड़की के कई छात्र व अन्य धर्मसम्बन्धी सहायक होते रहे।
- ❖ साउण्ड सिस्टम 'समीर साउण्ड सर्विस' रुड़की के सौजन्य से कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।
- ❖ ट्रांस्पोर्टेशन व्यवस्था श्री विनीत अरोड़ा जी ने दिन रात एक करके कुशलतापूर्वक पूरी की।
- ❖ फूलों की सजावट व स्टेज को भव्य रूप देने में सुश्री अनिता जी के निर्देशन में मेहरा जी ने अपनी टीम के साथ कुशलतापूर्वक सेवाएं प्रदान की।
- ❖ श्री हरमिलाप भवन के प्रबन्धन की जितनी तारीफ़ की जाए कम है। इस वर्ष भवन के मुख्य हाल की सीलिंग कराके उसको वातानुकूलित बनाकर भव्य रूप प्रदान किया गया है।

इन्सान हर घर में जन्म लेता है। लेकिन इन्सानियत कहीं-कहीं ही जन्म लेती है।

महाशिविर का पहला दिन (18 दिसम्बर, 2018)

प्रातः 10:00 बजे, वीडियो सैशन, विषयः जीवन में बहार कैसे आए?, वक्ता- डॉ. नवनीत अरोड़ा, संयोजकः श्री राजेश रमानी जी

इस वीडियो में डॉ. नवनीत जी ने बताया कि जीवन में बहार तभी आ सकती है, जब हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक हो। यह सकारात्मकता निम्न क्षेत्रों में होनी चाहिए तभी हमारा जीवन ख़ुशियों से भरपूर रहेगा-

(1) आयु के क्षेत्र में, (2) समय के क्षेत्र में, (3) धर्म के क्षेत्र में, (4) सम्बन्धों के क्षेत्र में, (5) उपकारियों के क्षेत्र में, (6) समाज के पुरुधाओं के क्षेत्र में, और (7) अपनी मृत्यु को लेकर

सायं 3:00 बजे, वीडियो सैशन, विषयः स्वयं से मुलाकात, वक्ता- डॉ. नवनीत जी, संयोजकः श्री राजेश रमानी।

डॉ. नवनीत जी ने बताया कि हम दूसरों से तो मिलते-जुलते रहते हैं, परन्तु अपने आप से नहीं मिलते। हमारा अहंकार हमें स्वयं को जानने में सबसे बड़ी बाधा है अतः हमें अपनी 'मैं' को छोड़ना होगा, तभी हम स्वयं को देख पायेंगे।

सायं 5:00 बजे, विषयः शरण तुम्हारी जो जन आया, माध्यम- सुश्री अनिता जी।

इस साधना सत्र के मुख्य अतिथि गुरुग्राम से पधारे **Earth Saviours Foundation** के संस्थापक, समाजसेवी श्री रवि कालरा जी रहे।

साधना के विषय पर बोलते हुए सुश्री अनिता जी ने बताया कि हम तीर्थस्थानों पर धर्म कर्म करने जाते हैं। धर्म कर्म में दान का बहुत महत्व है जिसमें अक्सर धन का या काम आने वाली वस्तुओं का दान किया जाता है, परन्तु इन सबसे बढ़कर एक दान है 'अभयदान' यह दान तब होता है जब हम अपने को निर्भय अर्थात् सुरक्षित महसूस करते हैं। सुरक्षित हम तभी हो सकते हैं जब हम किसी शक्तिशाली अस्तित्व की शरण में हों। 'देवात्मा' वह शक्तिशाली पुंज हैं, जिनकी शरण में आकर न केवल शरीर का वरन् मानसिक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक यानि जीवन के हर पक्ष का विकास होता है। डॉ. कु. प्रेमदेवी जी, श्रीमान् देवत्व सिंह जी, श्रीमान् ईश्वर सिंह जी व अन्य अनेक आत्मा 'देवात्मा' की शरण में आए और अपने जीवनों से वह फल पैदा किए कि न जाने कितने जीवन मृत्यु के आगोश में जाने से बच गए।

पूरे संसार में प्रकृति ने केवल इन्सान को ही मुस्कुराने का गुण दिया है। इस गुण को खोइए मत।

साधन के बाद मुख्य अतिथि श्री रविकालरा जी ने डॉ. नवनीत जी द्वारा लिखित पुस्तक 'नई सोच नया सवेरा भाग 3' का विमोचन किया, जिसमें श्री यशपाल सिंघल जी ने सहयोग प्रदान किया। राजपुरा (पंजाब) से पधारे प्रो. (डॉ) बलदेव राज घई ने श्रीमान् कालरा जी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्रीमान् कालरा जी ने बताया कि वर्तमान में उनके आश्रम में 600 के लगभग अपंग, निराश्रित, मानसिक विकलांग व अन्य रोगों से ग्रसित लोगों की देखभाल नि:शुल्क हो रही है। यह सब कुछ समाज के दानी जनों के सहयोग से ही सम्भव हो पा रहा है। वे अब तक 6000 लावारिस लाशों को अंतिम संस्कार कर चुके है। उन्हें मिशन की ओर से स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। इस बार उनके द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों के संदर्भ में एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

रात्रि 8:30 बजे: शिविरार्थियों द्वारा कीर्तन का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें मुख्य रूप से श्री सोतम कुमार जी, श्रीमती बलजोत जी, श्री विरेन्द्र डोगरा जी, श्री विनोद गर्ग जी व श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी ने भजन गान किया।

महाशिविर का दूसरा दिन (19 दिसम्बर, 2018)

प्रात: 09:00 बजे, विषय: 'धर्म की समझ', माध्यम: श्री वी. के. अग्रवाल जी

दीप प्रज्ज्वलन व भगवान् देवात्मा की छवि के अर्चन के बाद साधना के विषय पर अनेक धर्मग्रन्थों व अनेक विचारकों व संतो की वाणी के आधार पर वक्ता द्वारा समझाने का प्रयास किया गया कि केवल कर्मकाण्ड ही धर्म नहीं है वरन् असली धर्म अपनी आत्मा की मैल को धोकर उसके अन्दर व्याप्त बुराइयों से मोक्ष पाने का नाम है।

इससे आगे उन्होंने बताया कि भगवान् देवात्मा ने इस पक्ष में संसार को नेतृत्व प्रदान किया है क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर धर्म को सार्वभौमिक आधार प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि धर्म आत्मा की उच्च अवस्था का नाम है और यह उच्च अवस्था हृदय के उच्च भावों से आती है और ये उच्च भाव पूर्वजों द्वारा प्रदान की गई जन्मजात पूँजी, स्वाध्याय व उच्च आध्यात्मिक वातावरण द्वारा प्राप्त होते हैं। इससे आगे बढ़ते हुए देवात्मा ने सत्यधर्म की बात की है, वे कहते हैं कि, सत्य धर्म वह है जो हमें हमारी आत्मा की कमियों, उन कमियों से होने वाली हानि और उनसे बचने के उपाय बताकर आत्मा को सत्य मोक्ष प्रदान करता है। इससे आगे मनुष्य न केवल मानव जगत् अपितु भौतिक जगत्, वनस्पति जगत् व पशु जगत् की भी सेवा में

जिन्दगी में रिस्क लेने से कभी मत डरो या तो जीत मिलेगी
और हार भी गए, तो सीख मिलेगी।

लग जाता है बल्कि देवात्मा का देवबल पाकर चारों जगतों में हितकर मेल लाने में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करता है। जिसको यह समझ आ गया, वह धर्म के मर्म को समझ गया, वरना कर्मकाण्ड और दिखावा तो संसार में चल ही रहा है। इसलिए हमें जागरुकता से चलने की ज़रूरत है।

प्रातः 10:15 बजे, विषयः परमावश्यक सम्बन्धी कौन? माध्यमः श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी

साधना के विषय पर बोलते हुए अम्बाला से पधारे श्री चन्द्रगुप्त जी ने बताया कि हम मनुष्य केवल शरीर ही नहीं वरन् आत्मा भी हैं और जो गुरु, जो मार्गदर्शक हमारी इस आत्मा को जगाने का काम करे, इसके मोक्ष और विकास में सहायक बने, वह हमारा परमावश्यक सम्बन्धी है।

भगवान् देवात्मा ने बताया कि जीवन में हमने जो ग़लतियाँ की है, जो अपराध किए हैं और जिनके प्रति किए हैं उनसे क्षमा माँगनी होगी, उसकी भरपाई करनी होगी, तभी आत्मा की मैल धुलेगी। देवात्मा ने इसको 'हानि परिशोध' का नाम दिया है। उपकारियों के उपकारों को सम्मुख लाकर उनके लिए प्रति उपकार करने होंगे। अपने सम्बन्धों को अथपूर्ण बनाना होगा और यह कार्य न केवल मनुष्यों के प्रति वरन् सृष्टि के अन्य अस्तित्वों यथा- भौतिक, वनस्पति व पशु पक्षियों के प्रति भी करना होगा। भगवान् देवात्मा इस पक्ष में हमें जगाते हैं, इसलिए वे हमारे परमावश्यक सम्बन्धी हैं। देवात्मा आध्यात्मिक जगत् के सूर्य हैं, जैसे शरीर के लिए हमारे लिए भौतिक सूर्य का महत्त्व है, वैसे ही हमारी आत्मा के लिए देव सूर्य देवात्मा परम सम्बन्धी हैं।

सायं 3:00 बजेः भजन वेला

इस सत्र में धर्म सम्बन्धियों ने मिलजुल कर सुन्दर भजनों का गान किया जिसमें मुख्य रूप से श्रीमान् झण्डासिंह जी, श्रीमती सुदेश खुराना जी, श्रीमती विनीता भण्डारी जी, श्रीमती शशी गोयल जी, श्री विनोद गर्ग जी व श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी ने हृदय के भावों से भजनों का गान करके बड़ा उत्साहवर्धक व प्रभावी वातावरण बना दिया।

सायं 5:00 बजे, विषयः नवयुग के निर्माणक है देवात्मा, माध्यमः डॉ. नवनीत अरोड़ा, संचालकः श्रीमान् अशोक रोचलानी जी

साधना के विषय पर प्रकाश डालते हुए आई. आई. टी., रुड़की के प्रो. डॉ.

शानदार जिन्दगी जीने के दो तरीके हैं, जो पसन्द है उसे हासिल करो, नहीं तो जो हासिल है उसे पसन्द करो।

नवनीत जी ने बताया कि संसार में तीन प्रकार के लोग होते हैं- एक वे जो नवयुग का निर्माण करते हैं, समाज को एक नई दिशा और दशा देने के लिए अपने जीवन की समस्त शक्तियों को लगा देते हैं, यहाँ तक कि इसके लिए यदि उन्हें अपने जीवन को बलिदान भी करना पड़े, तो पीछे नहीं हटते। दूसरे वे लोग होते हैं जो इस निर्माण को होता देखते हैं, अपनी तरफ से कुछ सहयोग भी दे देते हैं और तीसरे वे लोग होते हैं जो नवनिर्माण होने के उपरान्त आश्चर्यजनक रूप से देखकर अचम्भित होते हैं। भगवान् देवात्मा नवयुग के निर्माणक हैं। भगवान् देवात्मा ने भारी विरोध के बावज़ूद हमेशा सच का साथ दिया। इसके लिए उन्हें मुकद्दमों, गालियों और यहाँ तक कि गोलियों का भी सामना करना पड़ा। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों, यथा- छुआछूत, दहेज प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा, आडम्बर, दिखावा आदि पर कठोर प्रहार किया। स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन कर समाज के ठेकेदारों की आँखों में खटकने लगे। उन्होंने अपनी भाभी व भतीजी को पढ़ाकर स्वयं अपने घर से स्त्री शिक्षा की बुनियाद रखी। फिर समय आने पर स्त्री शिक्षा के लिए स्कूलों, कालेजों की स्थापना की। पहली धर्म पत्नी के देहान्त के बाद एक विधवा व दूसरे प्रान्त की बंगाली स्त्री से विवाह करके एक मिशाल प्रस्तुत की।

उन्होंने सम्बन्धों को मानव जीवन का आधार बताया। इसके लिए उन्होंने 16 सम्बन्धों की शिक्षा दी। इनमें उन्होंने न केवल मनुष्यों को ही शामिल किया वरन् भौतिक जगत्, वनस्पति जगत् व पशु जगत् को भी शामिल किया।

देवात्मा ने संसार को पहली बार बताया कि श्रद्धा, कृतज्ञता जैसे उच्च भावों से आत्मा का बल बढ़ता है और ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, क्रोध, अहंकार जैसे नीच भावों से आत्मा का बल घटता है।

देवात्मा ने अपनी शिक्षा का आधार नेचर के सत्य नियमों को बनाया। उन्होंने बताया कि नेचर में चमत्कार असम्भव है तथा नेचर में क्षमा दान सम्भव नहीं है। उन्होंने अपने अनुयायियों को आठ प्रतिज्ञाओं, यथा- नशा न करना, जुआ न खेलना, मांसाहार न करना, रिश्वत न लेना, व्यभिचार न करना, अमानत में खयानत न करना, चोरी न करना, हिंसा न करना में बाँध दिया। यदि संसार में यह हो जाए तो संसार से बहुत सी बुराइयों का नाश हो जाए। इसीलिए देवात्मा नवयुग के निर्माणक हैं।

इसके बाद शिविर में पधारे दो भाइयों ने गले मिलकर व रो-रोकर पुराने गिले शिकवे भूलकर साथ आने की प्रतिज्ञा की, जिसे देखकर उपस्थित जन प.पू. भगवान

ज़िन्दगी ख़ुशियाँ बटोरते-बटोरते पता नहीं कब निकल गयी। अब पता चला कि ख़ुश तो वो थे, जो ख़ुशियाँ बाँट रहे थे।

व सहायकारी शक्तियों को धन्यवाद दे रहे थे, जो आत्माओं में इतना बल प्रदान करते हैं कि बरसों के गिले शिकवे पल भर में दूर हो जाते हैं।

सबसे अन्त में सभा संचालक अशोक रोचलानी जी ने सभी का आभार प्रकट किया तथा शुभकामना गीत का भावपूर्ण ढंग से सामूहिक रूप से गान करवाया।

रात्रि 8:30 बजे: मिशन से जुड़ने की ज़रूरत व विभिन्न प्रतिज्ञा पत्रों का पाठ डॉ. नवनीत जी ने किया। चार जनों को शिष्य/ शिष्या के रूप में ग्रहण किया गया। श्री साजन शर्मा जी ने अपने विचारों द्वारा सभी को प्रेरित किया।

महाशिविर का विशेष दिन (20 दिसम्बर, 2018)

आख़िर वह शुभ घड़ी आ ही गई जिसका हमें पूरे वर्ष बेसब्री से इंतज़ार रहता है। परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के 168 वें शुभ जन्म दिन की शुभ घड़ी। प्रात: 6:00 बजे श्री हरमिलाप भवन के प्रांगण में विशेष रूप से बनाए गए मंच के सामने धर्म सम्बन्धी व अन्य जन कतारबद्ध होकर एकत्रित होने लगे। सभी के हाथों में भगवान् के अर्चन के लिए गुलाब के फूल थे। सभी एक दूसरे को गले मिलकर बधाई हो! बधाई हो! कह रहे थे और भगवान् के जन्मदिन की शुभकामनाएं दे रहे थे। बारी-बारी से श्रीमान् जवाहरलाल जी, डॉ. सीमा शर्मा जी, श्री गुरुचरण सिंह पाहवा जी, श्री रामवीर सिंह जी व श्री सोतम कुमार जी ने भजनों का गान किया जिसे उपस्थित साथी दोहरा रहे थे। एक स्वर्गीय नज़ारा उपस्थित हो रहा था, जिसको उपस्थित जन ही महसूस कर सकते हैं।

ठीक सुर्योदय के समय घन्टा व शंख बजाकर प.पू. भगवान् के जन्मदिन की सूचना दी गई तो 'भगवान् देवात्मा की जय', 'सत्यदेव की जय' व 'सबका शुभ हो!' के नारों से आसमान गूँजने लगा। डॉ. नवनीत जी ने 'प्रगटे देवगुरु भगवान' पद वाले भजन का गान किया। फिर श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने मंच पर खड़े होकर आज के दिन की विशेषता बताई व सभी को भगवान् के जन्मदिन की बधाई व शुभकामनाएं दी।

इसके पश्चात् सभी ने कतारबद्ध होकर बारी-बारी से भगवन् की छवि का गुलाव के फूलों से अर्चन किया व सूक्ष्म सत्ता के सिंहासन के सामने नत्मस्तक होते रहे। डॉ. सीमा शर्मा जी व अन्य कई धर्मसाथी 'शुभ हो, सबका शुभ हो!, शुभ हो! शुभ हो! शुभ हो देवात्मा की मंगल ध्वनि का उच्चारण कर रहे थे। कितने ही जन अर्चन

अगर आप सही हो तो कुछ भी साबित करने की कोशिश मत करो। बस सही बने रहो गवाही वक़्त ख़ुद दे देगा।

करने जाते व अर्चन के बाद आते हुए साथियों को 'बधाई हो!' कहकर स्वागत कर रहे थे।

इस अवसर पर श्रीमती पूनम जैन व उनके परिवार की तरफ से पंचमेवा का प्रसाद वितरित किया गया। श्री प्रदीप कुश जी ने सभी को 16 त्यौहारों की तालिका वाला सन् 2019 का कलैन्डर वितरित किया। एक स्वर्गीय दृश्य उपस्थित हो रहा था, जिसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

प्रातः 9:00 बजे, विषयः देवात्मा का जीवनव्रत निराला क्यों? माध्यमः डॉ. नवनीत अरोड़ा, मुख्य अतिथिः प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी, निदेशक, आई. आई.टी., रुड़की

सबसे पहले डॉ. नवनीत जी ने मुख्य अतिथि का परिचय करवाया।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस वर्ष से आई.आई.टी., रुड़की में भगवान् देवात्मा की स्मृति में समाजसेवा के क्षेत्र में एक अवार्ड की घोषणा की गई। इसके तहत प्रति वर्ष किसी एक विद्यार्थी को समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए बीस हजार रुपये का नकद इनाम, प्रमाण पत्र व गोल्ड मैडल दिया जायेगा। इसके लिए आई.आई.टी., रुड़की और सत्यधर्म बोध मिशन के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अनुसार आई.आई.टी., रुड़की को 6,00,000/- रुपये **Corpus Fund** के रूप में दिए गए हैं। आज के दिन यह पत्र आई.आई.टी., रुड़की के निदेशक प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी जी ने मिशन के अध्यक्ष श्रीमान् अशोक रोचलानी जी को प्रदान किया। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने विचार भी रखे और सभी को देवात्मा जी के जन्मदिन की बधाई दी। निदेशक महोदय के साथ प्रबन्ध अध्ययन विभाग के प्रो. रजत अग्रवाल जी भी उपस्थित रहे।

निदेशक महोदय ने डॉ. नवनीत जी द्वारा लिखित पाकेट बुक '**Attitude of Gratitute**' का विमोचन भी किया।

फरीदाबाद से पधारे भगवान् के सेवक श्रीमान् कुलदीप सिंह दहिया जी ने भी अपने दादा मास्टर इन्द्रसिंह जी व अन्य पूर्वजों की याद में आई.आई.टी., रुड़की में एक अवार्ड प्रारम्भ किया। यह अवार्ड समाज सेवा हेतु किसी विद्यार्थी को भगवान् के महान् गुरु श्री पंडित शिव दयाल सिंह जी की स्मृति में दिया जायेगा। इसके तहत भी बीस हजार रुपए नकद, प्रमाण पत्र व गोल्ड मैडल दिया जायेगा। इस हेतु आई.आई.

कुछ लोग ठोकर खाकर बिखर जाते हैं,
कुछ लोग ठोकर खाकर इतिहास बनाते हैं।

टी., रुड़की को छः लाख रुपए Corpus Fund के रूप में दिए गए हैं।

भगवन् की छवि के अर्चन व दीप प्रज्वलन के बाद देव स्तोत्र का गान व उसकी व्याख्या की गई।

इसके बाद डॉ. नवनीत जी ने साधना के विषय पर बोलते हुए बताया कि इस विषय में तीन शब्द हैं- देवात्मा, जीवनव्रत और निराला।

देवात्मा कौन है? जिसका देवजीवन है, वह देवात्मा है और देवजीवन वह है जिसमें देवशक्तियाँ हों। देवशक्तियाँ क्या हैं? शुभ के लिए पूर्णांग प्रेम, सत्य के लिए पूर्णांग प्रेम और अशुभ के लिए पूर्णांग वैराग्य, असत्य के लिए पूर्णांग वैराग्य ही देवशक्तियाँ हैं। जिस हृदय में ये भाव वर्तमान हो वही देवशक्तियों से परिपूर्ण देवात्मा है। श्री सत्यानन्द जी अग्निहोत्री में ये शक्तियाँ वर्तमान थीं इसीलिए वे देवात्मा कहलाए और उन्होंने इनको पूर्ण करने के लिए निराला जीवनव्रत ''सत्यशिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के उपकार में ही जीवन यह जावे।'' ग्रहण किया और इसको पूर्ण करने के लिए अपनी समस्त शक्तियों को लगा दिया। तत्पश्चात् सभापति के बयान के चलते अचानक पूजनीय भगवान् ने सूक्ष्म रूप से माध्यम नवनीत जी पर अधिकार करके अपनी तड़प का परिचय दिया, तो चारों ओर विचित्र सन्नाटा छा गया। इस अविस्मरणीय दृश्य को तो मात्र महसूस ही किया जा सकता है।

साधन के अन्त में श्री भोजराज जी जैन ने अपने विचार रखे और आग्रह किया कि यदि कोई बड़ा शिविर पदमपुर में आयोजित किया जाता है, तो वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

सायं 3:00 बजे, बाल सभा, संयोजिकाः श्रीमती उषा मेहता व सुश्री अनिता सैनी।

इस सभा में बच्चों ने अपनी तोतली ज़ुबान में गुरु महाराज के जीवन की घटनाएं एवं देववाणी सुनाकर सबको हर्षित किया। कुछ बच्चों ने भजन और कविताएं भी सुनाई। मस्ती की पाठशाला के बच्चों ने 'धन्य है देवगुरु भगवान' पद वाले भजन का गान किया और 'मैं दूसरों की बदौलत हूँ' विषय पर लघुनाटिका प्रस्तुत की। तिसंग आश्रम के बच्चों ने 'बड़े भाग्य उनके हैं, जो गुरुचरणों में आते हैं' पद वाले भजन का ज्ञान किया। श्रीमती विनिता भण्डारी जी सभी बच्चों के लिए पुरस्कार लेकर आई। तिसंग आश्रम व मस्ती की पाठशाला के बच्चों को अलग-अलग सामूहिक रूप से दो

अगर आप किसी का अपमान कर रहे हैं तो वास्तव में आप अपना सम्मान खो रहे हैं।

शील्ड भी श्रीमती नैना रोचलानी जी द्वारा प्रदान की गईं।

सायं 5:00 बजे, विषय: जीवन की नींव, माध्यम: श्री अनुराग रोचलानी

साधना के विषय 'जीवन की नींव' पर बोलते हुए U.S.A से पधारे भगवान् देवात्मा के अनुयाई श्री अनुराग रोचलानी जी ने बताया कि जिस प्रकार हम मकान की नींव की चिन्ता करते हैं कि वह मज़बूत हो, उसी प्रकार हमें जीवन की नींव की मज़बूती की चिन्ता भी होनी चाहिए।

साधना के विषय को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने बताया कि इस संसार का जीवन हमें परलोक के जीवन की बुनियाद को मज़बूत करने के लिए मिला है। हमें अपने जीवन की बुनियाद में सीमेंट भरना है और यह सीमेंट है 'परसेवा व परोपकार' का सीमेंट। हम अपने जीवन की बुनियाद में यदि भगवान् देवात्मा को रख लें, तो सोने में सुहागा आ जाए। भगवान् की शिक्षाओं को जीवन में उतारें और न केवल शारीरिक सेवा वरन् आतंरिक सेवा अर्थात् आत्माओं को सुन्दर बनाने के काम में लग जावें, तभी यह जीवन भी सुन्दर बनेगा और परलोक का जीवन भी सुन्दर बनेगा।

बड़ा सुन्दर वातावरण बना। आपके क्रमवार, सुलझे विचारों की हर एक ने तारीफ़ की व पाए लाभ का वर्णन किया।

तत्पश्चात् हरप्रभ आसरा पदमपुर के प्रधान सरदार हरी सिंह जी ने सरल भावों से सेवा व परोपकार की महिमा गाकर सोने पर सुहागा कर दिया।

महाशिविर का समापन दिवस (21 दिसम्बर, 2018)

प्रात: 9:00 बजे, विषय: जो जुड़े सो तरे, माध्यम: श्रीमान् जवाहर लाल जी

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की छवि के अर्चन व दीप प्रज्वलन के बाद श्रीमान् जवाहर लाल जी ने बताया कि भगवान् देवात्मा के प्रभाव में जो जन आया वह तर गया। उन्होंने भगवान् के समय के व वर्तमान सेवकों के जीवनों में आए परिवर्तनों को बताकर स्पष्ट किया कि देवात्मा से जुड़ने में नुकसान तो कुछ नहीं है वरन् लाभ ही लाभ है, इसलिए लाभ का सौदा क्यों न करें?

इस अवसर पर निम्न जनों को मिशन के श्रद्धालु के परम पूज्य भगवान् के शिष्य/ शिष्याएं ग्रहण किया गया

भाग्य भी साहसी लोगों का ही साथ देता है।

शिष्य/ शिष्या ग्रहण

इस वर्ष निम्न जनों को शिष्य/ शिष्या के रूप में जुड़ने का सौभाग्य मिला- महाशिविर से पूर्व (फरवरी 2018) में

1. श्री मोहित रोचलानी सुपुत्र श्री विकास रोचलानी (दिल्ली)
2. श्रीमती प्रेरणा रोचलानी धर्मपत्नी श्री मोहित रोचलानी (दिल्ली), एम. टेक
3. श्री पुरुषोत्तम लाल कोहली सुपुत्र श्री राम भटेजा कोहली (फरीदाबाद), इंजी.
4. श्रीमती सरोज वाला कोहली धर्मपत्नी श्री पुरुषोत्तम लाल कोहली (फरीदाबाद)
5. श्री शौर्य सुपुत्र श्रीमती पूनम चौहान (चण्ढीगढ़)
6. श्रीमती बिन्नी खन्ना धर्मपत्नी श्री कर्ण खन्ना (मुम्बई), एम. टेक

(जून 2018 में)

7. श्री सुशील कुमार त्यागी, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
8. श्री विकास कुमार, पदमपुर (राजस्थान)
9. श्री कमल सहगल, बी.एच.ई.एल., हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
10. श्रीमती श्वेता सहगल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

(सितम्बर 2018 में)

11. श्री मयंक रामानी सुपुत्र श्री राजेश रामानी (भोपाल)
12. कु. अदिति रामानी सुपुत्री श्री राजेश रामानी (भोपाल)

महाशिविर के अवसर पर (19 दिसम्बर, 2018)

13. लता पृथ्यानी सुपुत्री श्री गुरदासमल रोचलानी (मुम्बई)
14. अरविन्द कुमार गर्ग सुपुत्र श्री मांगेराम (गाज़ियाबाद)
15. सीमा गर्ग धर्मपत्नी श्री अरविन्द कुमार गर्ग (गाज़ियाबाद)
16. ममता सक्सेना धर्मपत्नी श्री अनुराग सक्सेना (चण्डीगढ़)

(21 दिसम्बर, 2018)

17. जवाहर टहिलरामानी सुपुत्र श्री सुन्दर लाल (भोपाल)
18. अंशु टहिलरामानी धर्मपत्नी श्री जवाहर टहिलरामानी (भोपाल)
19. विजय अरोड़ा सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द्र (चौंदा, संगरुर)

जीवन हमें हमेशा दूसरा मौक़ा ज़रूर देता है, जिसे कल कहते हैं।

20. अमनदीप कौर धर्मपत्नी श्री विजय अरोड़ा (चौंदा, संगरुर)

21. एम. के. जैन सुपुत्र श्री राजाराम जैन (रुड़की)

22. कृष्ण कुमार राणा सुपुत्र श्री ओमवीर (बल्लभगढ़, फरीदाबाद)

23. जूही सिंघल धर्मपत्नी श्री शालीन सिंघल (सहारनपुर)

24. हरीशचन्द्र नारंग सुपुत्र श्री भगवानदास (मीरापुर, मुजफ़्फरनगर)

श्रद्धालु ग्रहण

इस वर्ष निम्न जनों को श्रद्धालु/मिशन सहायक के रूप में जुड़ने का सौभाग्य मिला

महाशिविर से पूर्व (फरवरी 2018 में)

1. श्री रवीन्द्र नाथ गुप्ता सुपुत्र श्री गोपाल राम गुप्ता (कोटा, राजस्थान), एम. टेक

2. श्री रोहित रस्तोगी सुपुत्र श्री आर. बी. रस्तौगी (ग़ाज़ियाबाद), एम. टेक

3. श्रीमती प्रियंका सैनी धर्मपत्नी श्री सन्दीप कुमार (रुड़की), एम. बी.ए., रिसर्च स्कोलर

(जून 2018 में)

4. श्री प्रफ्फुल सासिकला बाई वामनराव हाडेकर, अमरावती (महाराष्ट्र)

5. श्री मनोज गेरा, पदपुर (राजस्थान)

6. श्री अनमोल सिंह, पदमपुर (राजस्थान)

7. श्रीमती जसविन्द्र कौर, पदमपुर (राजस्थान)

8. कु. लक्ष्मी, पदमपुर (राजस्थान)

9. श्री युगल किशोर जोशी, पंचकूला (हरियाणा)

10. कु. गीतांजलि अरोड़ा, संगरुर (पंजाब)

(सितम्बर 2018 में)

11. श्री जसदेव सिंह सुपुत्र श्री जागीर सिंह, पदमपुर (राजस्थान)

12. श्रीमती अर्चना गुबरेले धर्मपत्नी श्री अरुण गुबरेले (भोपाल)

13. श्रीमती संगीता अरोड़ा धर्मपत्नी श्री नवीन अरोड़ा (सहारनपुर)

14. श्री संयम कुमार सुपुत्र श्री नवीन अरोड़ा (सहारनपुर)

सही दिशा में उठाया गया एक छोटा क़दम भी बहुत बड़ा साबित होता है।

महाशिविर के अवसर पर

15. श्रीमती प्रिया धर्मपत्नी श्री सौरव कुमार (रुड़की)

16. श्री बलदेव राज गुम्बर सुपुत्र श्री कृष्णलाल (सहारनपुर)

सबसे अन्त में परम पूजनीय भगवान् व सहायकारी शक्तियों के धन्यवाद देकर देवारती का गान किया गया। 'भगवान् देवात्मा की जय' की जयध्वनि के साथ इस अतिहितकर महाशिविर का समापन हुआ। सबका शुभ हो!

नई पुस्तकें

(नई सोच नया सवेरा भाग-3)

हर्ष का विषय है कि 'नई सोच नया सवेरा' नामक पुस्तक दो भाग पूर्व में छप चुके हैं तथा उनका दूसरा संस्करण भी आ चुका है। अब इस पुस्तक का तीसरा भाग छपकर तैयार हो चुका है। सुहृदय पाठक इस पुस्तक की प्रतियाँ मंगवा लें।

(Attitude of ratitude)

'कृतज्ञता' के भाव पर पहले एक पुस्तिका छप चुकी है जिसे पाठकों ने बेहद पसन्द किया है। हर्ष का विषय है कि उस पुस्तिका का **English Version** भी छपकर तैयार हो चुका है। इसका नाम **World Through Attitude of Gratitude** है। आकांक्षी जन इसकी प्रतियाँ मंगवा सकते हैं।

इस पुस्तिका को वर्तमान रूप में पहुँचाने में श्री मनीष अरोड़ा, कु. प्रिया सिंह, श्री यशपाल सिंघल व मोहित रोचलानी ने सम्पादक डॉ. नवनीत जी को बहुमूल्य सहयोग दिया है।

शोक समाचार

शोक का विषय है कि हमारी साथी सेविका श्रीमती सुनीता रानी (धर्मपत्नी श्री श्रेष्ठ अरोड़ा) के माननीय पिता श्री मदन लाल जी (कपूरथला) का 75 वर्ष की आयु में दिनांक 28 दिसम्बर, 2018 को देहान्त हो गया। परलोक में उनका शुभ हो! उनके पारिवारिक जन 05 जनवरी, 2019 को देवाश्रम, रुड़की पहुँचे, जहाँ शुभकामना का साधन डॉ. नवनीत जी ने करवाया। परिवार की ओर से 1000/- रुपए दानस्वरूप प्राप्त हुए।

जो गिरने से डरते हैं, वो कभी उड़ान नहीं भर सकते।

आ गया मौक़ा एक अनूठे उत्सव में शामिल होने का

जी हाँ

सम्बन्धों का उत्सव 2019

इसमें हम जानेंगे

हमारा जीवन क्या है, क्यों है और किनकी बदौलत है?
भाई-बहनों में परस्पर समझ, विश्वास व स्नेह का वर्द्धन कैसे हो?
अपने जीवनसाथी के साथ सामंजस्य, सुख व शान्ति का जीवन कैसे बितायें?
अपने जीवन के रचयिता माँ-बाप को किस दृष्टि से देखें व अपने बच्चों को संस्कार कैसे दें? अपने बच्चों का भविष्य कैसे सँवारें?

आइये, आज कुछ पल देकर आने वाले सभी पलों को सँवारे लें!

जीते जी स्वर्ग में

15 मार्च, 2019 शुक्रवार
सायं 5:30 से 7:00 बजे

सुखी व सार्थक वैवाहिक जीवन

16 मार्च, 2019 शनिवार
सायं 5:30 से 7:00 बजे

भाई-भगिनी यज्ञ साधन

17 मार्च 2019 शनिवार
प्रात: 09 से 10:30 बजे

माता-पिता व संतान यज्ञ साधन

17 मार्च 2019 रविवार
प्रात: 10 से 12 बजे

आज ही इस उत्सव से सपरिवार लाभ उठाने का संकल्प लें।
स्थान: **Better Life Training Institute** (देवाश्रम), रुड़की
32 सिविल लाइन्स, रुड़की
रजिस्ट्रेशन: 80778-73846, 94123-07242

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311), सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), ग़ाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पदमपुर (09309-303537), अम्बाला (94679-48965), मुम्बई (9870705771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (70094-36618)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242